विश्वविद्यालय का विकास हमारा दायित्व

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना भारत की संसद द्वारा 1996 में पारित अधिनियम के अंतर्गत 1997 में केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में की गई,यह देश का पहला अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की कर्मभूमि सेवाग्राम (वर्धा) से लगभग दस किलोमीटर दूर नागपुर –मुंबई हाइवे पर उमरी गाँव के निकट पंचटीला पर अवस्थित है निर्माणाधीन विश्वविद्यालय का क्षेत्रफल लगभग 212 एकड़ में है इस विश्वविद्यालय की स्थापना सुदीर्घ प्रयत्नों का सुफल है,हिंदी भाषा और साहित्य की उन्नति के साथ ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में अध्ययन,अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए एक समर्थ माध्यम के रूप में हिंदी का सम्यक विकास इसका प्रधान लक्ष्य है देश-दुनिया की भाषाओं के साथ हिंदी के तुलनात्मक साहित्य तथा उनसे अधुनातन अनुशासनों की अद्दतन ज्ञान-सामग्री का हिन्दी में अनुवाद और विकास भी विश्वविध्यालय की प्राथमिकता है आज के बहुभाषा-भाषी विश्व में एक समर्थ अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की पहचान स्थापित करना विश्वविध्यालय का प्रमुख लक्ष्य है विश्वविद्यालय में भाषा विद्यापीठ,साहित्य विद्यापीठ,संस्कृति विद्यापीठ,अनुवाद एवं निवर्चन विद्यापीठ,मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,सृजन विद्यापीठ,शिक्षा विद्यापीठ एवं प्रबंधन विद्यापीठ के अंतर्गत स्नातक,स्नाकोत्तर,शोध और डिप्लोमा के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं विश्वविद्यालय अपने विकास की ओर कदम बढ़ा रहा है इसके अतिरिक्त कोलकाता तथा इलाहाबाद में विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र भी चल रहे हैं जहाँ कई पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं |

विश्वविद्यालय ने अपने अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2011 से अंतरराष्ट्रीय समुदाय के शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम प्रारंभ किया है इस विश्वविद्यालय में आवासीय परिसर के साथ साइबर परिसर की सह- परिकल्पना की गई है,इसके लिए आधुनिकतम तकनीकी उपादानों को संयोजित किया जा रहा है पारंपरिक पुस्तकालय के साथ डिजिटल पुस्तकालय का विकास भी विश्वविद्यालय की योजना का ढांचा प्रयासरत है,मौलिक और मानक-ग्रंथो का प्रकाशन,दुर्लभ पांडुलिपियों,चित्रों,दस्तावेजों का संग्रह,विश्वकोशों,जनमाध्यम शब्द कोशों का निर्माण आदि विश्वविद्यालय की अनूठी योजनाएँ हैं |

विश्वविद्यालय का विकास और हिंदी भाषा की संस्कृति परम्परा में विभिन्न विषयों के माध्यम से शोध की प्रगति का अंतर्जाल प्रयत्नशील करना है हमारा दायित्व बनता है कि हमें विश्वविद्यालय की बुनियादी जड़े हिंदी भाषा के प्रचार – प्रसार को मजबूती और डिजिटल बनाना है धीरे- धीरे यह प्रयास हो रहे है हिंदी भाषा के विकास के दिये हम चहुँओर चारों ओर उजाले की तरह फैला रहे है हमारी आवाज गूंजती रहे यह प्रलोभन हम सबमें हो,इसके लिए हिंदी पत्रकारिता और बेब जर्नलिज्म जैसे कोर्स पढ़ना,पढ़ाना अभी वाकी है यह सार्थक प्रयास होगा जिससे की आने वाले समय में यहाँ के विद्यार्थी गर्व से कहे कि हम कहे की

हम हिंदी विश्वविद्यालय से ही अच्छी हिंदी भाषा और हिंदी का तकनीकी ज्ञान सीखकर आये हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना दिवस के उन्नीसवा वर्ष आज मना रहा है पंचटीला की आवाज विश्वभर में फैले सबका साथ,सबका विकास के साथ संभव है और हमने तकनीकी ज्ञान मीमांसा के हर क्षेत्र में अभी भी विकास नहीं किया है आज के दौर से यदि देखा जाए कि सीखने –सिखाने के लिए डिजिटलाइजेशन शोध जर्नल,शोध पत्रिका,शोध कांफ्रेंस,सेमीनार,वर्कशाप विविधता में अनेकता लिये हुए यह विश्वविद्यालय है डिजिटलाइजेशन राहुल सांकृत्यायन कुछ हुआ है अभी करना बाकी है जरूरत महसूस होने लगी अभी सभी विभाग लाइबेरी डिजिटल करना बाकी है जिससे हिंदी भाषा का सर्वांगीण विकास विश्व भाषा के रूप में हो

महात्मा गाँधी का संदेश है 'राष्ट्रभाषा के बिना भारत गूंगा है' गाँधीजी की पुण्य भूमि में वर्धा में इस विश्वविद्यालय की स्थापना से अपने पूर्ण उद्देश्य की ओर अग्रसर समावेशी विकास कर रहा है शिक्षा में वर्तमान बदलाव की ओर अग्रसर है ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों और कलाओं के साथ उसका घनिष्ठ एवं प्रगाढ़ संबंध रहा है अब यहाँ

यह विश्वविद्यालय हिंदी की प्रभावी प्रकार्यात्मक क्षमता के विकास के विकास प्रति समर्पित है इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने चरम उद्देश्य को हिंदी भाषा के वैज्ञानिक और प्रौधोगिकीय अध्ययन में संलग्न है हमारा विश्वविद्यालय देश का पहला अंतरअनुशासनिक शोध प्रदान करने वाला महात्मा गांधी की हिंदी अंतरर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय है जहाँ दलित अध्ययन,

शोधार्थी कुमारी नेहा नेमा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा (महाराष्ट्र)